The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 2 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान में तथ्य संग्रहण एवं अनुसूची प्रविधि का महत्त्व

Dr. Prishila Soren

Ph.D., Political Science, Sido Kanhu Murmu University, Dumka, Jharkhand, sonasoren48@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18963103

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-02-2026

Published: 10-03-2026

Keywords:

वैज्ञानिक, अनुसन्धान, सामाजिक, तथ्य, प्रविधि, अनुसूची, शोध अवलोकन, साक्षात्कार

ABSTRACT

मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी है। जिसने प्रकृति को समझने एवं अपनी समस्याओं के सामाधान के लिए हमेशा प्रयास किया है। अज्ञात तथ्यों का पता लगाने की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है। सर्वप्रथम उसने प्राकृतिक घटनाओं को और फिर उसने सामाजिक घटनाओं को समझने की कोशिश की। आधुनिक युग गतिशीलता का युग है। गतिशीलता में वृद्धि के साथ ही समाज के मूल्यों और मान्यताओं में भी परिवर्तन हुआ है। परिवर्तन के इस क्रम में मानव सम्यता का निरन्तर विकास होता जा रहा है। इस युग में दो शब्द सबसे अधिक प्रचलित है शोध (research) और विज्ञान (Science) शोध (research) दो शब्दों 'Re' और 'Search' से मिलकर बना है। 'री' का अर्थ है पुनरावृति या पुनः देखना, जबकि 'सर्च' का अर्थ है खोजने की प्रक्रिया। इसलिए शोध किसी भी ज्ञान के क्षेत्र में नए तथ्यों की खोज के लिए एक सावधानी पूर्वक जाँच और अन्वेषण है। शोध मूल रूप से वैज्ञानिक प्रकृति का होता है, जिसमें निष्पक्ष डेटा मूल्यांकन पर बल दिया जाता है। वैज्ञानिक विधि में समस्या की पहचान करना संबंधित डेटा एकत्रित करना, एक परिकल्पना तैयार करना और इसे प्रयोगात्मक रूप से परीक्षण करना शामिल है। वैज्ञानिक शोध को सही दिशा देने के लिए तथ्यों का सटीक चयन

अत्यन्त आवश्यक है। सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान में अनुसूची तथ्य संकलन की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रविधि है। इस प्रविधि में अवलोकन, साक्षात्कार तथा प्रश्नावली की विशेषताएँ समाहित होती है।

उद्देश्य :–

i. इस शोध पत्र का उद्देश्य सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान में तथ्य संग्रह एवं अनुसूची प्रविधि की महत्व को उजागर करना है।
ii. शोध के प्रति शोधकर्ताओं में अभिरूचि को बढ़ाना।
iii. सामाजिक अनुसन्धान में शोध हेतु वैज्ञानिक प्रविधि को प्राथमिकता देना।

परिचय :– प्रसिद्ध हडसन नीति वाक्य के अनुसार सभी प्रकार की प्रगति जिज्ञासा से ही जन्म लेती है। हमारी शंकाएँ जिज्ञासा को पैदा करती है, और जिज्ञासा आविष्कार की ओर ले जाती है। शोध वस्तुतः एक संचरित जाँच है जो समस्याओं का समाधान करने और नई सार्वभौमिक रूप से लागू ज्ञान उत्पन्न करने के लिए स्वीकृत वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करती है। शोध का उद्देश्य किसी वस्तु, घटना को समझना या किसी समस्या का समाधान करना है। कुक ने एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया है, जिसमें उन्होंने शोध को एक समस्या के संबंध में तथ्यों और उनके अर्थों या निहितार्थों की ईमानदारी, परिश्रम और बुद्धिमानी से खोज के रूप में परिभाषित किया है। उनके अनुसार, शोध को निम्नलिखित प्रमुख घटकों में बांटा जा सकता है।1

- R – Rational thinking (तार्किक सोच)
- E – Expert and thorough treatment (विशेषज्ञ और गहन उपचार)
- S – Search and solution (खोज और समाधान)
- E – Exactness (सटीकता)
- A – Analysis (विश्लेषण)
- R – Relationship of facts (तथ्यों का संबंध)
- C – Careful planning (सतर्क योजना)

- H – Honesty and hard work (ईमानदारी और कठिन परश्रिम)

शोध एक यात्रा पर निकलने के समान है, और इसके अंतिम गंतव्य की स्पष्ट समझ होना अनिवार्य है। इस यात्रा के दौरान कदमों का कोई निश्चित क्रम नहीं होता, लेकिन शोधकर्ताओं को विभिन्न ढंगों दृष्टिकोणों और प्रक्रियाओं के माध्यम से नेविगेट करना चाहिए। शोधकर्ता का अनुभव लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कार्यों का मार्गदर्शन करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सामाजिक अनुसन्धान :– सामाजिक अनुसन्धान से तात्पर्य सामाजिक घटनाओं और मानव व्यवहार के बारे में व्यवस्थित तरीके से ज्ञान प्राप्त करना है। यह ऐसी विधि है, जिसका उपयोग सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा सामाजिक प्रवृतियों सिद्धान्तों और समस्याओं को समझने के लिए किया जाता है। इसमें डेटा एकत्र करना, उसका विश्लेषण करना और समाज के बारे में नऐ निष्कर्ष निकालना शामिल है, जिसके लिए व्यवस्थित विधियों जैसे सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन और अनुसूची का उपयोग किया जाता है।

सामाजिक शोध की प्रकृति वैज्ञानिक है, क्योंकि इसमें वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग किया जाता है। शोध का मुख्य लक्ष्य वैज्ञानिक निष्कर्षों की प्राप्ति सामान्यीकरण तथा नियमों का प्रतिपादन करना है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु वैज्ञानिक विधि या वैज्ञानिक कार्य विधि का सहारा लेना आवश्यक है। इस पद्धति के कई चरण है, जिनसे होकर शोधकर्ता को गुजरना पड़ता है। जो निम्नलिखित है :–

1. समस्या (विषय) का चयन
2. संबंधित साहित्य का अध्ययन
3. इकाईयों का निर्धारण
4. परिकल्पना का निर्माण
5. अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण
6. सूचनादाताओं का चुनाव
7. सूचना के स्त्रोतों एवं अध्ययन उपकरणों का निर्धारण
8. प्रविधियों का पूर्व–परीक्षण
9. तथ्यों का अवलोकन व संकलन
10. तथ्यों का अवलोकन व वर्गीकरण

11. तथ्यों का विश्लेषण व विवेचन
12. सामान्यीकरण एवं नियमों का प्रतिपादन

वैज्ञानिक पद्धति के संबंध में वुल्फ ने लिखा है, व्यापक अर्थों में कोई भी अनुसन्धान विधि जिसके द्वारा विज्ञान की रचना और विस्तार होता है, वैज्ञानिक पद्धति कहलाती है।2

सामाजिक घटनाओं की प्रकृति बहुत जटिल है। सामाजिक घटनाएँ बदलती रहती है। सामाजिक घटनाओं में सार्वभौमिकता का अभाव पाया जाता है। सामाजिक घटनाओं को नापा–तौला नहीं जा सकता है, फिर भी आज विभिन्न सामाजिक विज्ञानों में वैज्ञानिक पद्धति का प्रतिपादन किया जाता है, और ये नियम सार्वभौमिक होते है, ऐसी स्थिति में यह कहा जा सकता है कि सामाजिक विज्ञानों में सामाजिक अनुसन्धान की प्रकृति वैज्ञानिक है। समाजशास्त्र और इसके क्षेत्र में होने वाले अनुसन्धान की प्रकृति भी वैज्ञानिक है। इसमें तथ्य संकलन के लिए सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति, वैयक्तिक जीवन अध्ययन पद्धति, अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची, प्रश्नावली आदि का उपयोग किया जाता है। इसमें ऐतिहासिक, तुलनात्मक एवं संरचनात्मक प्रकार्यात्मक पद्धतियों का भी सहारा लिया जाता है। इनमें से उपयुक्त पद्धतियों का प्रयोग करते हुए तथ्य एकत्रित किये जाते हैं, तथा सामाजिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है।

तथ्य :–तथ्य संकलन शोध प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण है। जिस प्रकार ईट, चुना, पत्थर, सीमेण्ट, बजरी, लकड़ी, लोहा आदि के बिना किसी भवन का निर्माण नहीं किया जा सकता, ठीक उसी प्रकार तथ्यों या सामग्री के बिना शोधकार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता। किसी भी वैज्ञानिक निष्कर्ष तक पहुँचने एवं सामान्यीकरण तथा सैद्धान्तीकरण के लिए सूचनाएँ प्राप्त करना, तथ्य एकत्रित करना आवश्यक है। तथ्य का तात्पर्य ऐसी सभी सूचनाओं, सामग्री व आँकड़ों से है, जो कि क्षेत्रीय कार्य (Field Work) और द्वैतीक स्त्रोतों (Secondary Sources) के माध्यम से प्राप्त किए जाते है।

1. **प्राथमिक तथ्य (Primary Data)** वे सभी सूचनाएँ, संगृहीत की गई सामग्री और आँकड़े जिन्हें, शोथकर्ता ने अपने अध्ययन (शोध) हेतु स्वयं या अपने सहायकों की मदद से एकत्रित किया हो, प्राथमिक तथ्य कहलाते है।

पीटर एच0 मान के अनुसार, ''प्राथमिक स्त्रोत वे स्त्रोत हैं, जो प्रथम बार तथ्य प्रदान करते है, ये तथ्य संकलित करने वाले लोगों द्वारा प्रस्तुत किये तथ्यों का मौलिक स्वरूप होते हैं।3

प्राथमिक तथ्यों के संबंध में पी0वी0यंग लिखते हैं, ''प्राथमिक तथ्य का तात्पर्य उन सूचनाओं व आंकड़ों से है जिनको पहली बार संकलित किया गया हो तथा जिनके संकलन का उत्तरदायित्व शोधकर्ता या अन्वेषणकर्ता का अपना है।4

2. **द्वैतीयक तथ्य (Secondary Data)** वे सब सूचना के आँकड़े एवं तथ्य जिन्हें शोधकर्ता अपने अध्ययन हेतु स्वयं संकलित नहीं करता, बल्कि जो पहले से ही प्रकाशित या अप्रकाशित रूप में उपलब्ध है, द्वैतीयक सामग्री या तथ्य कहलाते हैं। इनमें पत्र, डायरियाँ, आत्मकथाएँ, पांडुलिपियाँ, सरकारी प्रतिवेदन, जनगणना रिपोर्ट, गजेटियर प्रलेख, अभिलेख आदि आते है। पी0वी0यंग के अनुसार ''द्वैतीयक तथ्य वे होते हैं जिन्हें मौलिक स्त्रोतों से एक बार प्राप्त कर लेने के पश्चात् काम में लिया गया हो एवं जिनका प्रसारण अधिकारी उस व्यक्ति से भिन्न होता है, जिसने प्रथम बार तथ्य संकंलन को नियंत्रित किया था।5

अनुसूची प्रविधि :– सामाजिक अनुसन्धान तथा सर्वेक्षण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात विषय से संबंधित वैध एवं विश्वसनीय तथ्यों का संकलन है। तथ्यों के संकलन की एक प्रमुख प्रविधि अनुसूची है। यद्यपि प्रश्नावली और अनुसूची में पर्याप्त समानता है, फिर भी अनुसूची की अपनी विशेषताएँ हैं। इसके द्वारा साक्षात्कार एवं अवलोकन पर नियंत्रण रखा जाता है। अनुसूची प्रश्नों की एक लिखित सूची होती है, जिसे अनुसन्धानकर्ता सूचनादाता से पूछता जाता है और भरता जाता है। प्रश्नावली में आने वाले दोषों को दूर करने के लिए भी अनुसूची विधि का प्रयोग किया जाता है। अनुसूची प्राथमिक तथ्यों का संकलन करने की एक विधि है, जिसमें अवलोकन, साक्षात्कार तथा प्रश्नावली तीनों की विशेषताओं एवं गुणों का समन्वय पाया जाता है। अनुसूची के माध्यम से वैयक्तिक मान्यताओं, सामाजिक अभिवृतियों, विश्वासों, विचारों, व्यवहार, प्रतिमानों, समूह व्यवहारों, आदतों तथा जनगणना आदि से संबंधित तथ्यों का संकलन किया जाता है।

अनुसूची के प्रकार6 :–

1. **अवलोकन अनुसूची (Observation Schedule) –**

इस प्रकार की अनुसूची का प्रयोग अध्ययनकर्ता अपने अवलोकन को लिखने के लिए करता है। इसमें वह सूचनादाता से प्रश्न नहीं पूछता है, वरन् घटनाओं का अवलोकन कर स्वयं ही प्रश्नों के उत्तर को भर देता है। अवलोकन पथ–प्रदर्शिका होती है। यह अनुसंधानकर्ता पर नियंत्रण रखती है और उसे किस प्रकार की सूचनाएँ संकलित करनी है, इसका मार्गदर्शन भी करती है।

2. **मूल्यांकन अनुसूची (Rating Schedule) –**

इस प्रकार की अनुसूची का प्रयोग किसी विषय के बारे में लोगों की अभिवृति, रूचि, राय, विश्वास तथा अनुभूति आदि के सांख्यिकीय मापन हेतु किया जाता है। इसमें सूचनादाता की पसंद–नापसंद तथा पक्ष–विपक्ष के विचारों को जाना जाता है।

3. **प्रलेख अनुसूची (Document Schedule) –**

इस प्रकार की अनुसूचियों का उपयोग लिखित प्रलेखों जैसे आत्मकथा, डायरियों, सरकारी तथा गैर सरकारी दस्तावेजों आदि से प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए किया जाता है। जिनके बारे में लिखित प्रलेखों से सूचनाएँ मिलने की सम्भावनाएँ होती है।

4. **संस्था सर्वेक्षण अनुसूची (Institution Survey Schedule) –**

इस प्रकार की अनुसूचियों का उपयोग किसी संस्था के किसी विशेष पक्ष, उसकी आन्तरिक एवं बाह्य समस्याओं तथा कार्यकलापों का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार की अनुसूचियों के द्वारा पंचायतों, सहकारी समितियों, शिक्षण संस्थाओं, जेलों आदि की कार्यप्रणाली का अध्ययन सरलता से किया जा सकता है।

5. **साक्षात्कार अनुसूची (Interview Schedule) –**

इस प्रकार की अनुसूचियों में सूचनाएँ प्रत्यक्ष साक्षात्कार के द्वारा एकत्रित की जाती है। इसमें निश्चित प्रश्न अथवा खाली सारणी दी हुई होती है, जिन्हें साक्षात्कारकर्ता सूचनादाता से पूछकर भरता है। इसके द्वारा साक्षात्कार को व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध किया जाता है। इनसे प्राप्त सूचनाओं का वर्गीकरण एवं सारणीयन बहुत आसान होता है। सहायक सूचनाओं की प्राप्ति संगृहीत सामग्री की जाँच अथवा अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए इस प्रकार की अनुसूची का प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्ष :– सामाजिक विज्ञान शोध सामाजिक घटनाओं और सामाजिक समस्याओं से संबंधित होता है। साथ ही सामाजिक शोध की प्रकृति वैज्ञानिक होने के कारण इसमें शोध विशेष उद्देश्यों से प्रेरित

होता है। सामाजिक शोध आज के युग में दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया है। शोध में धन और समय दोनों ही लगते हैं फिर भी बहुत से लोग शोध कार्यों से जुड़े हुए हैं। इसका कारण सामाजिक शोध का बढ़ता हुआ महत्व है। सामाजिक शोध को बेहतर ढंग से सम्पन्न कराने में शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत किये गये तथ्यों एवं तथ्य संग्रह की प्रविधि महत्वपूर्ण स्थान रखती है। ये दोनों शोध की दशा एवं दिशा का निर्धारण करते हैं। सामाजिक अनुसन्धान में विषय से संबंधित आँकड़ों को एकत्रित करने में अनुसूची विधि सर्वाधिक रूप से प्रचलित है। इस प्रविधि में उत्तरदाताओं से सम्पर्क करना कठिन होता है, इसका उपयोग सीमित क्षेत्रों में किया जाता है, सार्वभौमिक प्रश्नों के निर्माण में कठिनाई होती है तथा सूचनादाताओं द्वारा पक्षपात करने की सम्भावनाएँ ज्यादा होती है। परन्तु कई अवगुण होने के बावजूद भी इस प्रविधि द्वारा एकत्रित की गई सूचनाएँ विश्वसनीय होती है। क्योंकि इसके द्वारा यर्थात् एवं वास्तविक आँकड़ो को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संकलित किया जाता है। इस प्रविधि में अवलोकन साक्षात्कार तथा प्रश्नावली तीनों ही प्रविधियाँ कार्य करती है। अतः यह प्रविधि अधिक विश्वसनीय आँकड़ों के संकलन में सहायक होता है।

संदर्भ सूची :–

- के.बी.एस.मदान, ''शिक्षण एंव शोध अभियोग्यता,'' पियर्सन इंडिया एजुकेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड 2025 Page No-2.2
- A. Wolfe, "Essentials of Scientific Method", Page No-15
- Peter H.Mann, "Method's of Sociological Enqury", Page No-56
- P.V. Young, "Scientific Social Survey and Research," Page No-127
- वही
- राम आहुजा, सामाजिक अनुसन्धान, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पेज नं0–299